BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

भारतीय जैन संघटना समाचार

सितम्बर 2015
अंक 9

श्री शांतीलाल मुथ्था
संस्थापक

2
- राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से
- इनसे मिलिये श्री राकेश जैन राजाध्यक्ष BJS, मध्यप्रदेश

3
- शांतिमय एवं प्रगतिशील विश्व की परिकल्पना को वास्तविकता प्रदान करती क्षमाशीलता

4-5
- भारतीय जैन संघटना कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ – चित्र समाचार
- चेन्नई में एक ही दिन में श्रृंखलाबध्द कार्यक्रमों का आयोजन

6
- युवती सक्षमीकरण –भारतीय जैन संघटना का नवअनुबंध
- 'जागो कहीं देर ना हो जाये' छत्तीसगढ़ में जनजाग्रति अभियान

7
- अल्पसंख्यक समाचार, जानकारी एवं विविध सूचनाएं

8
- श्री मुथ्था की आत्मकथा 'Blessed to serve' का विमोचन

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से ....

प्रिय आत्मजन्,

क्षमाशीलता विषय पर सितंबर माह का यह अंक आप सभी पाठकों को समर्पित करते हुए गत वर्ष में हुई भूलों व अपराधों हेतु सविनय क्षमा याचना करता हूँ.

प्रसंगोपात बंधुत्व एवं सहअस्तित्व की भावना को क्षण-प्रतिक्षण प्रबलता प्रदान कर रहे पर्युषण पर्व का समापन हाल ही में हुआ. वैश्विक बंधुत्व एवं सहअस्तित्व क्षमा याचना की भावना से ही सम्भव है. किन्तु एक महत्वपूर्ण प्रश्न जो हम सभी के मन मस्तिष्क पर हथोड़े की तरह चोट कर रहा है कि संकुचितता से ऊपर उठकर श्रेष्ठ समाज के निर्माण में 'क्षमा' की मूल भावना को जन्-जन् तक पहुँचाने हेतु क्या हम कुछ प्रयास कर रहे हैं?

वर्तमान वैश्विक चिंतनीय स्थितियों से आप सभी अवगत हैं. संपूर्ण विश्व आतंकवाद की ज्वालाओं से झुलस रहा है. प्रतिदिन समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठ आतंकवादी कृत्यों से उपजी करूणान्तियों से भरे रहते हैं. हिंसा का तांडव दिन -प्रतिदिन अधिक रौद्र स्वरूप धारण कर रहा है. धर्म के नाम पर आतंक और हिंसा को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखने का प्रचलन वैश्विक शांति एवं सहअस्तित्व के लिए खतरा बन चुका है. जड़ मान्यताओं एवं विचारों के रक्षण हेतु हिंसा का प्रयोग अब आम बात है. समस्त विश्व आत्मघात के पथ पर अग्रसर हो रहा है और लगता है कि आचारात्मक तथा विचारात्मक हिंसा के युग में जीने के अतिरिक्त, अब हमारे पास कोई अन्य विकल्प शेष ही नहीं रहा है.

मित्रों! यह कटु वास्तविकता है कि विज्ञान वरदान है किन्तु हम इसे अभिशाप बनाने पर तुले हुए हैं. हम उस वातावरण के मूक साक्षी बन चुके हैं जिसमें नित नयी दीवारें खड़ी की जाती हैं. हमें विचार करना ही होगा कि हम कैसे व किस तरह के समाज निर्माण में रत हैं? हमारी भावी पीढ़ियों को क्या हम ऐसा समाज उपहार स्वरूप देना चाहेंगे जो स्वार्थ, हिंसा, अंधविश्वास, राग एवं द्वेष रूपी बारूद के ढेर पर खड़ा हो?

भले ही आज महावीर मात्र जैन धर्मावलम्बियों के भगवान बनकर रह गए हों किन्तु हमें स्मरण में रखना होगा की वे विश्व के श्रेष्ठतम् समाजशास्त्री हैं जिन्होंने सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों को 2500 से अधिक वर्षों पूर्व प्रतिपादित किया जो प्रगतिशील, सुख-समृद्धि एवं शांतिमय जीवनयापन हेतु मूलभूत रूप से आवश्यक है तथा आज की वैश्विक परिस्थितियों में अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है.

जलती हुई शाख पर कोई भी पंछी घौंसला नहीं बना सकता, अतएव संतुलित समाज की रचना हेतु जैन दर्शन प्रदत्त सामाजिक मूल्यों को समझने व व्यवहार में लाने हेतु हमें स्वयं संकल्पित होने के साथ ही इस भावना को जन्-जन् तक पहुँचाने की आवश्यकता है. आज आवश्यकता है कि सम्पूर्ण विश्व अनेकांत के महत्व को समझे व आचरण में लाये. समय की मांग है कि संवेदनशील समाज की रचना हेतु हम आगे आयें. विश्व शांति हेतु एक नवीन सेतु के निर्माण का आव्हान आपसे कर रहा हूँ जिसकी नींव में सत्य और अहिंसा रूपी सीमेंट व रेती का प्रयोग हो ताकि उस पर चल कर एक इंसान प्रेम, बंधुत्व व संवेदनाओं सहित 'वसुधैव कुटुम्बकम' की रचना हेतु दूसरे इंसान तक पहुँच सके.

प्रफुल्ल पारख,
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना

संपादक मण्डल

संपादक
प्रफुल्ल पारख, पुणे

कार्यकारी संपादक
निरंजन कुमार जुवाँ जैन, अहमदाबाद

सदस्य
कैलाशमल दुगड़, चैन्नई
सुरेश कोठारी, अहमदाबाद
सुदर्शन जैन, बडनेरा
वीरेंद्र जैन, इंदौर
महेश कोठारी, गोंदिया
संजय सिंगी, रायपुर
राजेंद्र लुंकड़, इरोड

इनसे मिलिये

श्री राकेश जैन 'प्रखर' इन्दौर (म.प्र)

श्री राकेश जैन देश के जाने माने मॅनेजमेंट गुरू हैं जो 'बदलोगे तो बढ़ोग' आदि व्यावसायिक कार्यशालाओं के प्रणेता हैं व व्यापार विकास सेमिनारों तथा कोचिंग हेतु प्रख्यात व्यक्तित्व हैं. आप भा.जै.सं. मध्यप्रदेश राज्य के अध्यक्ष एवं भा.जै.सं. व्यापार विकास कार्यक्रम के संयोजक व राष्ट्रीय प्रभारी हैं.

आपने M.Com, DMM, MBA व व्यावसायिक शिक्षण की विविध डिग्रीयां जैसे ASCI, IMC एवं MCTE क्रमशः Stanford, Maryland एवं Virginia विश्वविद्यालयों से प्राप्त की हैं.

एक बड़ी मल्टीनेशनल कम्पनी में आपने CEO के पद पर सेवाएं दी जिसकी गणना विश्व की प्रथम 100 कृषि व्यावसायिक कम्पनियों व देश में 17 वें क्रम पर की जाती है. आपने ३ मॅनेजमेंट संस्थान इन्दौर, ग्वालियर एवं देवास में स्थापित किये, जिनकी गणना देश के श्रेष्ठ 25 प्रबंधन शिक्षण संस्थानों मे होती है. आपने टेक्सटाईल,केटलफीड, सोयाबीन एवं फूड प्रोसेसिंग, तेल व वनस्पती घी, LPG सिलेंडर, स्टील, इलेक्ट्रॉनिक्स, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, शिक्षण Real Estate का 40 वर्षों से अधिक का अनुभव अर्जित किया है. आप देश की ख्याति प्राप्त संस्थाओं से जुड़े हैं जिनमें Confederation of Indian Industries, Indore Management Association, Pithampur Industries Association, Rotary Club व Jain Social Group प्रमुख हैं.

आपने 8 वर्ष की आयु में 'बालसम्मान' पुरस्कार श्रीमती इंदिरा गांधी के करकमलों से प्राप्त किया जो आपके बाल्यकाल से ही प्रतिभाशाली होना प्रमाणित करता है. इसके अतिरिक्त Rotary Foundation का 'International peace & World Understanding', Jaycee Award 'Outstanding young personality', AIMA award 'Outstanding Young Manager' आदि सम्मानों से अलंकृत हुए.

आप बहुमुखी प्रतिभाओं के धनी हैं. आपने 'Management Competition Successful Strategies' एवं 'Entrepreneurship Business Hubs for Inclusive & Sustainable Growth' विषय पर रिसर्च पेपर प्रकाशित किये हैं तथा 'Management for Success' विषय पर 10 पुस्तकों का लेखन व प्रकाशन किया है.

शांतिमय एवं प्रगतिशील विश्व की परिकल्पना को वास्तविकता प्रदान करती क्षमाशीलता

जैन दर्शन में 'क्षमापना' दिवस के महत्व से हम सभी परिचित हैं. परिवारजन्, मित्रों, संबंधियों, परिचितों व समाजजन् से सच्चे हदय के साथ, मानव स्वभाव के वशीभूत हुई उन भूलों एवं कृत्यों से जो किसी का दिल दुखाने या मन को आहत करने का कारण बने हों, क्षमायाचना की परंपरा है.

संवत्सरी, पर्युषण महापर्व का अंतिम एवं महत्वपूर्ण दिन है जो हमें 'क्षमा' की सफल एवं भावपूर्ण आराधना का अवसर प्रदान करता है. 'क्षमापना' संवत्सरी का प्राण रूप है और पर्युषण महापर्व का सारभूत तथ्य है. पर्युषण पर्व को उत्सवमय करना सरल है किन्तु क्षमा के परिपेक्ष्य में संवत्सरी की साधना एक महान कृत्य है.

क्षमा के महत्व को वर्णित करते हुए कल्पसूत्र में भगवान महावीर ने कहा है कि स्वयं से हुई भूलों हेतु सच्चे हृदय से क्षमा याचना करनी चाहिए और यदि दूसरों की भूल हो तो उनको उदार हृदय से क्षमा करना चाहिए. इस अर्थ में क्षमा वीरों का आभूषण है. कायर मनुष्य कभी किसी को क्षमा करने की क्षमता ही नहीं रखता. 'क्षमा' की अनुभूति के अभाव में धर्म की आराधना महज औपचारिकताओं से अधिक कुछ भी नहीं है.

क्रोध अग्निज्वाला है जो स्वयं को तो जलाती ही है साथ ही दूसरों को भी जला डालती है. संसार में घटित हो रहे अधिकांश अपराध क्रोधावस्था में घटित होते हैं. शांत और पवित्र हृदय, अपराध हेतु प्रेरित हो ही नहीं सकता. घृणा– तिरस्कार, ईर्ष्या–द्वेष, निंदा–भेदभाव आदि क्रोध के ही रूप हैं जो शांति और प्रगति को नष्ट कर देते हैं. यह एक ऐसा अवगुण हे जिसे संतोष एवं 'क्षमा' की भावना से ही दूर किया जा सकता है.

क्षमाभाव में मैत्री का संगीत गुंजायमान होता है जो असीम सुख की अनुभूति प्रदान करता है. क्षमा बिना शांति व आनंद की कल्पना निरर्थक है, अतएव 'क्षमा' मात्र धार्मिक–आध्यात्मिक प्रक्रिया ही नहीं है अपितु व्यावहारिक दृष्टिकोण से शांतिपूर्ण जीवन–यापन हेतु आवश्यक तत्व है. शांति, समाधान, सहअस्तित्व, सहिष्णुता एवं मैत्री के लिए क्षमापना संजीवनी के समान है.

वर्तमान में कुछ परिस्थितियाँ प्रलय स्वरूप बन रही है जिसमें प्रथम पर्यावरण प्रदूषण है. औद्योगिकरण के नाम पर कारखानों एवं वाहनों ने सम्पूर्ण वायु एवं जल को प्रदूषण से भर दिया है. द्वितिय प्रलय विकिरणों का है. अणुशस्त्रों के प्रयोग परीक्षणों के कारण निकल रही रेडियों विकिरणों से समस्त सृष्टि के भावी पर अनेक प्रश्न चिन्ह लग रहे हैं. तृतीय प्रलय जनसंख्या विस्फोट का है जिसके धमाकों एवं कंपनों से हम सभी भयभीत हैं. चतुर्थ प्रलय परमाणु युध्द के खतरे का है. परमाणु युध्द की स्थिति में पृथ्वी जीवन योग्य ही नहीं रह जाएगी अत: मानव जीवन नामशैष हो जाने का भय सदैव ही बना रहेगा. किन्तु इन प्रलयों से ऊपर महाप्रलय है जिसका कारण मानव स्वयं है. मनुष्य में बढ़ रहे धृष्ट चिंतन एवं भ्रष्ट आचरण ही सम्पूर्ण जगत में घटित हो रहे जघन्य अपराधों का मूल कारण है. इस महाप्रलय का एक अन्य मुख्य कारण मनुष्य का संवेदनहीन होना है. ऐसा प्रतीत हो रहा है कि हम यांत्रिक मानवों की दुनिया के निर्माण में रत हैं.

अयोग्य दिशा में गति कर रही यह मानवता, जड़ताओं एवं धर्मांधता प्रेरित वैचारिक संस्कृति ही विश्व के विनाश का कारण बन रही है. विश्व में प्रचलित समस्त धर्म, अहिंसा, सहिष्णुता, समानुभूति एवं मैत्रीभाव की वकालत करते हैं क्योंकि यह शांतिमय समाज की रचना हेतु आवश्यक किन्तु इनके व्यावहारिक अभिगम पर अनेक प्रश्न चिन्ह लगे हुए हैं. जैन दर्शन में सुखद व शांतिमय समाज की रचना हेतु प्रतिपादित वैज्ञानिक अभिगमों को सरलता से आचार एवं व्यवहार में समाहित कर विश्व को उचित एवं योग्य दिशा देना संभव है. भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सत्य और अहिंसा के सिद्धातों की उपयोगिता एवं महत्व मानव सभ्यता के उद्गमकाल से सार्वभौम हैं. काल परिवर्तन में इनकी उपयोगिता एवं परिभाषाओं में बदलाव आता रहा है. इनको भिन्न–भिन्न तरीकों से परिभाषित करने व समझने की मनोवृत्ति के साथ आचरण एवं व्यवहार में विविधताएं दृष्टिगोचर होती रहती हैं. किन्तु ये शाश्वत सिद्धान्त हैं जिनका अर्थ एवं महत्व सदैव से समान रहा है. वर्तमान प्रलयकारी परिस्थितियों में सम्पूर्ण विश्व को विनाश से बचाने हेतु इनकी उपयोगिता को जन्–जन् तक प्रभावकारी तरिकों से पहुंचाने की आवश्यकता है.

आदर्श एवं संतुलित समाज की रचना हेतु उन सभी आवरणों को दूर करने की आवश्यक्ता है जो हमारी जड़ एवं रूढ़ीवादी मानसिकता का हिस्सा बन चुकी हैं. सत्य एवं अहिंसा की वैश्विक स्तर पर व्यावहारिक परिकल्पना से यह संभव है जिस हेतु 'क्षमा' के भाव को समझना एवं व्यवहार में लाना नितांत आवश्यक है.

श्री. शांतिलाल मुथ्था के नेतृत्व में भारतीय जैन संघटना गत तीन दशकों से इस दिशा में कार्यरत है. युवती एवं युगल सक्षमीकरण कार्यक्रम समाजजन् व विशेषकर युवा वर्ग में गुम होती जा रही मानवीय संवेदनाओं को अब धरोहर स्वरूप हदय में सँजो कर रखने, स्वयं तथा परिवार को सुखी करने में अनेकांत के सिद्धान्त तथा सामाजिक पारिवारिक मूल्यों को समझने व 'क्षमा' भाव के महत्व एवं अनिवार्यता को सामाजिक, धार्मिक व आध्यात्मिक परिपेक्ष्यों में आत्मसात करने का अवसर प्रदान करते हैं जो निश्चित ही आदर्श एवं संतुलित विश्व के निर्माण हेतु रचनात्मक प्रयास है.

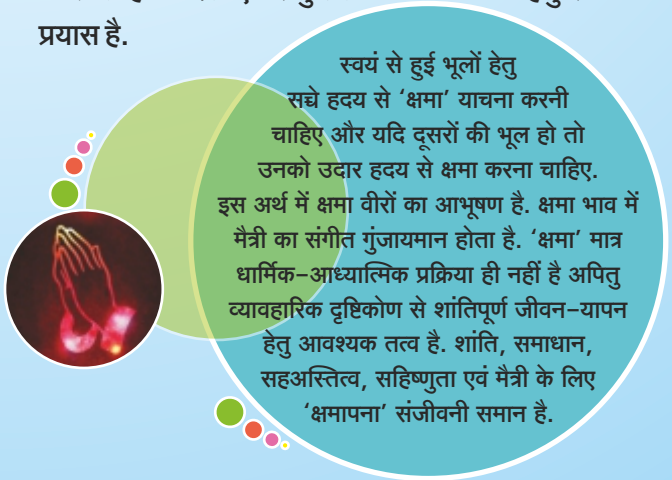

भारतीय जैन संघटना कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ - चित्र समाचार

युवति सक्षमीकरण

अर्शिया जुही, वंदना पटनाईक, चंद्रपुर रत्नाकर महाजन, अकोला संदीप इंदाने, अकोला

कुशल बलदोटा, अकोला संगिता चोपडा, अलवार

भैरवी जैन, तारंगा दर्शना कोठारी, राजकोट, गुजरात राजश्री चौधरी, सागर, मध्यप्रदेश

ईओजी इन्ट्रो

ईओजी ट्रेनर्स ट्रेनिंग

बीजेएस आपके द्वार, म.प्र. तृतीय चरण

बीजेएस कर्नाटक राज्य कार्यकारिणी सभा, हॉस्पेट

बिझनेस डेव्हलपमेंट

परिचय सम्मेलन लुधियाना,पंजाब

वैवाहिक रिश्तें तय करने के पारंपारिक प्रक्रिया में बदलाव,धमतरी

उद्घाटन, चेन्नई

भारतीय जैन संघटना का ६ सितंबर को चेन्नई में श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रमों का आयोजन

श्री सकल जैन संघ के तत्वाधन में प्रात: 10:30 प. पू. आचार्य नवरत्नसागर सुरिश्वरजी म. सा., आचार्य प. पू. आचार्य विश्वरत्नसागर सुरिश्वरजी आदि साधु भगवंतो की पावन निश्रा में 3000 से अधिक समाजजन् को चेन्नई की दादावाड़ी में राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजेंद्र लुंकड़ ने भारतीय जैन संघटना के विभिन्न समाजपयोगी कार्यक्रमों की जानकारी दी. युवती सक्षमीकरण कार्यक्रम विषय पर विस्तृत चर्चा की. इस अवसर पर आचार्य म.सा. ने परस्पर प्रेम व मैत्री का बीजारोपण कर रही भारतीय जैन संघटना को आशीर्वाद प्रदान किए.

दोपहर मे युगल सक्षमीकरण पर परिचय सत्र का गुरूशान्ति कालेज, वेपेरी में चैविहार क्लब, रिची स्ट्रीट व राजस्थानी एसोसिएशन के सयुंक्त तत्वाधान में आयोजन हुआ, जिसमें श्री लुकंड़ ने 50 युगलों को युगल सक्षमीकरण विषय के महत्व एवं आवश्यकता पर प्रकाश डाला.

सायं. 7 बजे उत्तर चेन्नई, जैन संघ के तत्वधान में आयोजित कार्यक्रम में 500 से अधिक समाजजन् को श्री लुकंड़ ने संबोधित किया. श्री लुकंड़ की उपस्थिति में युवति सक्षमीकरण कार्यशाला आयोजित करने तथा भा.जै.सं. का चेप्टर प्रारम्भ करने का निर्णय जैन संघ द्वारा लिया गया.

6 सितंबर को ही स्वाध्याय भवन, साहूकारपेठ मे प्रात: 7 बजे 100 से अधिक जैन समाज के बुद्धिजीवियों को श्री राजेन्द्र लुकंड़ ने श्री सुधीरजी सुराना की उपस्थिति मे संबोधित किया. कार्यक्रमों को सफल बनाने मे श्री राजेंद्र दुगड़ एवं श्री महावीर परमार आदि का सराहनीय योगदान रहा.

रीजनल वोकेशनल गाईडेंस एवं सेलेक्शन ऑफीस, अमरावती के साथ युवती सक्षमीकरण कार्यक्रम हेतु भारतीय जैन संघटना का अनुबंध

विदर्भ (महाराष्ट्र) के 5 जिलों के 2000 से अधिक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं को भारतीय जैन संघटना के युवती सक्षमीकरण कार्यक्रम मे सक्षम करने हेतु रीजनल वोकेशनल गाईडेंस एवं सेलेक्शन ऑफीस , अमरावती द्वारा अनुबंध पर हस्ताक्षर किये गये.

विदर्भ के अमरावती, अकोला, बुलढाणा, यवतमाळ एवं वाशिम जिलों के सरकारी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में युवती सक्षमीकरण कार्यशाला आयोजित करने संबंधी इस अनुबंध पर वोकेशनल गाईडेंस अधिकारी नीलिमा टाके ने भारतीय जैन संघटना के महामंत्री श्री महेश कोठारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुदर्शन जैन, राज्य उपाध्यक्ष श्री अशोक संघवी व राज्य पदाधिकारी सर्वश्री –प्रदीप जैन, संजय आंचलिया, गाईडन्स कार्यालय के सर्वश्री अभिनंदन पेंढारी एवं चंद्रशेखर गुलवडे की उपस्थिति में हस्ताक्षर किये.

भारतीय जैन संघटना के एक लाख से अधिक युवतियों को सक्षम करने के अभियान में यह अनुबंध एक महत्वपूर्ण सिद्धि है, जिससे भा.जै.सं. की राष्ट्र निर्माण में रचनात्मक भागीदारी अधिक पुख्ता होगी.

छत्तीसगढ़ राज्य सरकार का प्रशंसनीय प्रयास

पर्वों पर मांस विक्रय प्रतिबंधित

नगरीय प्रशासन एवम् विकास विभाग छत्तीसगढ़ राज्य ने आदेश क्रमांक4/34/स/पर्यावरण न.वि./2002 दिनांक 7 सितम्बर 2002 तथा विभाग के पत्र क्रमांक 14 अगस्त 2015 के द्वारा आनेवाले महीनों में निम्नांकित अवसरों पर मांस, मटन, मछली, अण्डों की बिक्री प्रतिबंधित की है :

1 डोल ग्यारस – 24 सितम्बर
2 अनंत चतुर्दशी – 27 सितम्बर
3 संवत्सरी उत्तम क्षमा – 28 सितम्बर
4 गांधी जयंती –2 अक्टूबर
5 भगवान महावीर निर्वाण दीपावली –11 नवम्बर
6 संत तरण तारण जयंती एवं गुरू घासीदास जयंती –18 दिसंबर, 2015

गुजरात राज्य सरकार गत अनेक वर्षों संवत्सरी पर्व के 8 दिन कत्लखाने बंद रखने का आदेश गत अनेक वर्षों से देती आ रही है. शाकाहार प्रवृत्ति को उत्तेजनाप्रदान करने व अहिंसक समाज की भावनाओं का आदर करने हेतु राज्य सरकारों द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं.

'जागो कहीं देर न हो जाये'

भारतीय जैन संघटना छत्तीसगढ़ राजाध्यक्ष श्री निर्मल बरडिया, भूतपूर्व राजाध्यक्ष डॉ भूरचंद कर्णावत एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री महेश कोठारी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ राज्यस्तरीय जनजागृति यात्रा 'जागो कहीं देर न हो जाय' आयोजित हुई. 9 दिवसीय इस यात्रा में राजाध्यक्ष श्री बरडिया ने समाज की समस्याओं एवं चुनौतियों को समझने व एकजुट होकर समाधानों के प्रयास हेतु अपील की. श्री महेश कोठारी ने जीवन साथी के चयन की प्रक्रिया में बदलाव विषय पर यात्रा के दौरान धमतरी में समाजजन् को संबोधित किया व परंपरागत व्यवसाय के समक्ष उपस्थित चुनौतियों विषय पर चर्चा कर समाधान भी प्रस्तुत किए. युवती सक्षमीकरण कार्यक्रम की आवश्यकता पर बल देते हुए प्रत्येक नगर/शहर में कार्यशालाएं आयोजित करने हेतु प्रार्थना की गई.

22 सितंबर को धमतरी से प्रारम्भ हुई यह जनजागृति यात्रा भाकरा, नगरी, केशकाल, कांकेरी, भानुप्रतापपुर, नारायणपुर, डोंगरगढ़, डोंगरगांव, मुंगेली, पंढ़ियारा, कवरधा, सम्बलपुर, दुर्ग, अहिवारा, देवकर, धमधा, बेरला व 29 को भिलाई में सम्पन्न हुई. यात्रा का उद्देश्य समाज के समक्ष चुनौतियों के प्रति समझ का वातावरण निर्मित कर भारतीय जैन संघटना के कार्यक्रमों से समाजजन् को अवगत कराना था.

इस यात्रा में भारतीय जैन संघटना के पदाधिकारियों में श्रीमती सरिता छाजेड, श्री सुमित खटोड, श्री धर्मेंद्र छाजेड, श्रीमती शिल्पा नाहर आदि ने भाग लिया.

उच्च शिक्षणरत विद्यार्थियों हेतु महाराष्ट्र राज्य स्तरीय छात्रवृत्ति योजना वर्ष 2015-16

सभी धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों हेतु महाराष्ट्र राज्य सरकार के तकनिकी शिक्षण निर्देशालय, मुंबई ने परिपत्र क्रमांक DTE/Minority/SGS/2015/161 दिनांक 31.8.15 द्वारा छात्रवृत्ति योजना की घोषणा उन विद्यार्थियों हेतु की है जो Professional Technical Courses में Diploma/Engineering/Technology UG & PG/Pharmacy/Architecture/Hotel Management आदि वर्ष 2015-16 में शिक्षणरत हैं.

पात्रता नियमों में :

(1) विद्यार्थी महाराष्ट्र राज्य के निवासी हो

(2) वार्षिक पारिवारिक आय रू. 6 लाख से कम हो

(3)अन्य सरकारी योजना के तहत छात्रवृत्ति प्राप्त नहीं की हों एवं

(4) SSC परीक्षा महाराष्ट्र से ही उत्तीर्ण की हो इस योजना में विद्यार्थी

'www.dtemaharashtra.gov.in/scholarship' पर Online नवीन (Fresh) आवेदन 1 से 30 अक्तूबर 2015 तक कर सकेंगे. नवीनीकरण आवेदन की अंतिम तिथि 30 सितंबर थी जो समाप्त हो चुकी है. छात्रवृत्ति योजना के नियमों व आवेदन की प्रक्रिया तथा अनिवार्य दस्तावेजों आदि का विवरण प्राप्त करने तथा महाराष्ट्र राज्य के बाहर अन्य राज्यों में शिक्षणरत विद्यार्थियों हेतु आवेदन की प्रक्रिया एवं नियमों जानने हेतु 'www.dte.org.in' पर log-on करें.

अल्पसंख्यक मंत्रालय ने आवेदन पत्र आमंत्रित किए

अल्पसंख्यक मंत्रालय, भारत सरकार ने अधिसूचित अल्पसंख्यक समुदायों के प्रत्याशी जिन्होंने सिविल सेवा समूह अ एवं ब पदों हेतु वर्ष 2015-16 में संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) कर्मचारी चयन आयोग (SSC) एवं राज्य लोक सेवा आयोग (SPSC) द्वारा आयोजित प्राथमिक परीक्षा उत्तीर्ण की है तथा मुख्य परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं व जिनकी वार्षिक पारिवारिक आय रू 4.50 लाख से कम है, राजपत्रित पद हेतु रू 50,000 एवं अराजपत्रित पद हेतु रू 25,000 की आर्थिक सहायता के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किए हैं. योजना का विवरण व आवेदन पत्र का प्रारूप प्राप्त करने हेतु अल्पसंख्यक मंत्रालय की website 'www.minorityaffairs.gov.in/supportforclearingPrelim' पर log-on करें

BJS भारतीय जैन संघटना
empowering today enriching tomorrow

जय जिनेंद्र

Bharatiya Jain Sanghatana Minority Benefits update WhatsApp सेवा में पंजीयन करने के लिए धन्यवाद्।

Bharatiya Jain Sanghatana Minority Benefits update WhatsApp सेवा का तकनीकी कारणों से नंबर बदल गया है।

Minority Benefits updates नियमित रूप से प्राप्त करने हेतु आपसे प्रार्थना है कि हमारा नया नंबर

7769082288

आपके मोबाईल सेट में सेव्ह करें.

आपसे यह भी प्रार्थना है कि इस सूचना को जैन समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुचाएं व उन्हें इस सेवा में पंजीयन कराने हेतु प्रेरित करें। समाज हित में आपसे इस सेवा से जुडने हेतु प्रार्थना करते हैं।

अधिक जानकारी हेतु हमसे संपर्क करें।

भारतीय जैन संघटना

(020- 41200600, 41280011, 41280012, 41280013)

भा.जै. सं. का प्रयास सफल हुआ अब कर्नाटक में जैन समुदाय को जारी होंगे अल्पसंख्यक प्रमाणपत्र

भारतीय जैन संघटना अल्पसंख्यक जनजाग्रति अभियान के राष्ट्रीय प्रभारी श्री निरंजन जुवाँ जैन के नेतृत्व में प्रतिनिधि मण्डल श्री अडोनी सैय्यद सलीम, सहसचिव, अल्पसंख्यक कल्याण विभाग, कर्नाटक राज्य सरकार, बैंगलोर से २० जून २०१५ को मिला था. कर्नाटक राज्य के जैन समुदाय को अल्पसंख्यक लाभ प्राप्त करने में व्याधन रूप सरकारी आदेशों व जैन समुदाय के सभी पंथों को अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र जारी नहीं करने आदि विषय पर चर्चा की थी.

कर्नाटक सरकार के अल्पसंख्यक कल्याण विभाग ने आदेश क्रमांक MWD77LMR 2015 दिनांक 05.08.2015 से अवरोधों को दूर करते हुए राज्य के सभी तहसीलदारों को समस्त जैन समुदाय को अल्पसंख्यक प्रमाणपत्र जारी करने के आदेश दिये हैं.

कर्नाटक राज्य में निवास कर रहे जैन समुदाय को सलाह दी जाती है कि उनके परिवार के प्रत्येक सदस्य हेतु अल्पसंख्यक प्रमाणपत्र प्राप्त करने तहसिलदार कार्यालय में आवेदन करें.

अल्पसंख्यक के लाभ कार्यशालाएं

श्री शांतिलाल मुथ्था की आत्मकथा "BLESSED TO SERVE" विमोचित

यशदा के तृतीय पुणे इंटरनेशनल लिट्रेसी फेस्टीवल में श्री मुथ्था के करकमलों से विमोचन सम्पन्न

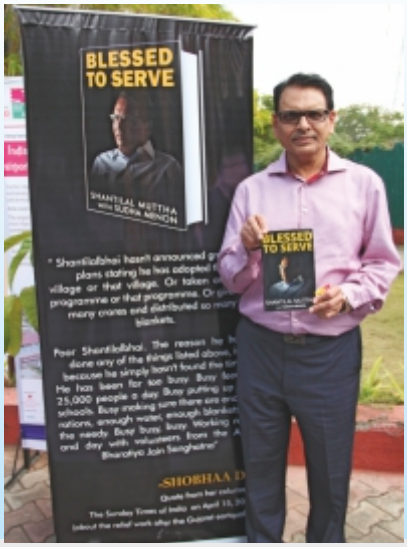

6 सितंबर को पुणे में भारतीय जैन संघटना के संस्थापक श्री शांतिलाल मुथ्था की आत्मकथा का विमोचन पुणे के प्रतिष्ठित महानुभावों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ. एक अकेला व्यक्ति समाज में परिवर्तन की लहर को इस तरह गतिमान रख सकता है, इसका अनुभव श्रोताओं को श्री मुथ्था एवं पुस्तक की सहलेखिका सुधा मेनन के मध्य कार्यक्रम में हुए वार्तालाप से हुआ.

श्री मुथ्था ने कहा की 30 वर्षों की उनकी सफल सामाजिक यात्रा, उनके बचपन को समर्पित है. जीवन के प्रारम्भिक दौर में साहस और अनुभवों ने मुझे बहुत कुछ सिखाया, परिणामस्वरूप अब तक जीवन यात्रा में अडिग एवं संकल्पित रह सका हूँ. नवकल्पनाओं एवं सामाजिक विचारों पर साहसिक प्रयोग मेरे जीवन का क्रम बन चुका है. उन्होंने कहा कि युवास्था से ही मुझमें गहराई हुई सामाजिक विचारधाराओं को मुर्तरूप देना मेरा स्वभाव बन गया व मेरे परिवारजन् भी मेरी विचारधाराओं को सदैव से संबल प्रदान कर रहे हैं. यह सामाजिक उत्तरदायित्वों की भावना ही थी जिसने मुझे सरकारी विद्यालयों में मूल्य आधारित शिक्षा अभियान प्रारम्भ करने हेतु प्रेरित किया. आपने कहा है कि बच्चे देश के कर्णधार हैं अत: प्रामाणिकता का बीजारोपण उनमें आवश्यक है.

पुस्तक में श्री मुथ्था की अद्वितीय जीवन यात्रा शब्दांकित हुई है. समाज उत्थान एवं विकास के पर्याय बन चुके श्री मुथ्था का एक मात्र उद्देश्य मनुष्यजन के जीवन मे बदलाव लाकर उन्हें खुशहाल करना है.

२०११ की सरकारी जनगणना

जैन समाज की कुल जनसंख्या का आकड़ा कितना सही कितना गलत?

२०११ मे हुई सरकारी जनगणना के आकड़े पिछले माह घोषित किए गए. जैन समुदाय की राज्यवार जनसंख्या निम्न है:

१	महाराष्ट्र	१४,००,३४९	७	तमिलनाडू	८९,२६५	१३	असम	२५,९४९	१९	मणीपुर	१,६९२
२	राजस्थान	०६,२२,०२३	८	छत्तीसगढ़	६१,५१०	१४	बिहार	१८,९१४	२०	गोवा	१,१०९
३	गुजरात	०५,७९,६५४	९	पश्चिम बंगाल	६०,१४१	१५	झारखंड	१४,९७४	२१	त्रिपुरा	०,८६०
४	मध्यप्रदेश	०५,६७,०२८	१०	आंध्रप्रदेश	५३,८४९	१६	जम्मू-काश्मीर	०२,४९०	२२	अरूणाचल	०,७७१
५	कर्नाटक	०४,४०,२८०	११	हरियाणा	५२,६१३	१७	उत्तराखंड	०२,१८३	२३	मेघालय	०,६२७
६	उत्तरप्रदेश	०२,१३,२६७	१२	पंजाब	४५,०४०	१८	हिमाचल	०१,८०५	२४	मिजोराम	०,३७६
									२५	सिक्किम	०,३१४

केन्द्र शासित प्रदेश

दिल्ली	१,६६,२३१	पॉडेचेरी	१,४००	दीव दमण	२८७	लक्षद्वीप	११
चंडीगढ़	०,०१,९६०	दादर व नगर हवेली	१,१८६	अंडमान निकोबार	०३१		

सरकारी आकड़ो के अनुसार जैन समुदाय की कुल राष्ट्रीय जनसंख्या ४५.५० लाख है. क्या यह आंकड़ा सही है? जैन समुदाय की वस्तिविक जनसंख्या क्या है? ऐसे अनेक प्रश्न हैं जिस पर जैन समुदाय द्वारा चिंतन अनिवार्य है. जैन समुदाय को मिले धार्मिक अल्पसंख्यक दर्जे के अनुसंधान मे दर्शाये गए जनसंख्या के सरकारी आकड़ो से मिलने वाले अल्पसंख्यक लाभों मे क्या स्थिति रहेगी? देश के सम्पूर्ण जैन समुदाय का ध्यान इस विषय पर आकर्षित कर आवश्यक कार्यवाही की योजना बनाना समाज हित में जरूरी है.

उच्चशिक्षित जैन युवक-युवती परिचय सम्मेलन
(Highly Educated Jain Matrimonial Get-together)
शनिवार, 21 नवंबर, 2015, पुणे शैलेश जैन : 94250 89627

Book-Post

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana
Muttha Towers, Loop Road,
Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411006
Tel.: 020 4128 0011, 4128 0012, 4128 0013
Website : www.bjsindia.org E mail : info@bjsindia.org
Facebook : www.facebook.com/BJSIndia